

# संयुक्त राष्ट्र और ग़ज़ा में नरसंहार: संस्थागत विश्वसनीयता को पुनर्स्थापित करने के लिए कानूनी मार्ग

2025 के अंत तक, ग़ज़ा में जारी नरसंहार 21वीं सदी की सबसे निर्णायक और विनाशकारी संकटों में से एक बन चुका है। इज़राइल की सैन्य मुहिम का निरंतर और व्यवस्थित स्वरूप – जो नागरिक बुनियादी ढांचे के विनाश, भोजन, पानी और चिकित्सा देखभाल से वंचित करने, तथा नागरिकों की व्यापक हत्या से चिह्नित है – ने अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यवस्था में गहरा हिसाब-किताब उत्पन्न किया है।

## १. ग़ज़ा में नरसंहार को मान्यता देने वाले राज्य और संगठन

अंतरराष्ट्रीय राय का एक बढ़ता हुआ समूह, जिसमें सरकारें, अंतर-सरकारी अंग, संयुक्त राष्ट्र के तंत्र और नागरिक समाज संगठन शामिल हैं, अब इज़राइल की ग़ज़ा में कार्रवाइयों को नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948) के अर्थ में नरसंहार के रूप में पहचानते हैं। यह फ्रेमिंग न केवल मौखिक निंदा को दर्शाता है, बल्कि एक कानूनी विशेषता है जो संधि दायित्वों, न्यायिक प्रक्रियाओं और प्रामाणिक जांच निष्कर्षों पर आधारित है।

निम्न सूची उन राज्यों, अंतर-सरकारी अंगों और संस्थानों की पहचान करती है जिन्होंने इज़राइल की ग़ज़ा में कार्रवाइयों को औपचारिक रूप से नरसंहार कहा है या इस संदर्भ में नरसंहार संधि का उल्लेख किया है:

- **दक्षिण अफ्रीका** — अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में नरसंहार संधि का अनुप्रयोग (दक्षिण अफ्रीका बनाम इज़राइल) शिकायत दर्ज की जिसमें नरसंहार का आरोप लगाया (29 दिसंबर 2023), अदालत ने अंतरिम उपाय चरण में नरसंहार के आरोपों को «संभाव्य» पाया (26 जनवरी 2024)।
- **तुर्की** — दक्षिण अफ्रीका की नरसंहार शिकायत के पक्ष में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में औपचारिक हस्तक्षेप किया (7 अगस्त 2024)।
- **ब्राज़ील** — राष्ट्रपति लूला ने इज़राइल की ग़ज़ा में कार्रवाइयों को बार-बार «नरसंहार» कहा (18 और 26 फरवरी 2024; 8 जून 2025)।
- **कोलंबिया** — राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने इज़राइली अभियान को सार्वजनिक रूप से «नरसंहार» बताया (1 मई 2024; 30 अगस्त 2025; महासभा में भाषण 23 सितंबर 2025)।
- **सऊदी अरब** — क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने इज़राइली अभियान को «नरसंहार» कहा (11 नवंबर 2024)।
- **पाकिस्तान** — प्रेस ब्रीफिंग और विदेश मंत्रालय के बयान बार-बार «ग़ज़ा में नरसंहार» का उल्लेख करते हैं।
- **मलेशिया** — विदेश मंत्रालय के बयान इज़राइल की कार्रवाइयों को स्पष्ट रूप से «नरसंहार» बताते हैं (2025 में कई बयान)।
- **इंडोनेशिया** — विदेश मंत्रालय के बयान ग़ज़ा में इज़राइली ऑपरेशनों की निंदा के लिए «नरसंहार» शब्द का उपयोग करते हैं (अगस्त 2024)।
- **होंडुरास** — सरकार ने इसे «नरसंहार» कहकर निंदा की और अपना राजदूत वापस बुलाया (अक्टूबर 2023)।
- **बोलीविया** — अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में नरसंहार शिकायत के समर्थन में हस्तक्षेप की घोषणा दर्ज की; आधिकारिक दस्तावेज मुद्रे को नरसंहार संधि के ढांचे में रखते हैं (अक्टूबर 2024)।
- **इस्लामी सहयोग संगठन (OIC)** — ग़ज़ा पर हमले को «सामूहिक नरसंहार» कहा (दिसंबर 2023) और बाद में संयुक्त राष्ट्र जांच के नरसंहार निष्कर्षों का स्वागत किया (सितंबर 2025)।
- **खाड़ी सहयोग परिषद (GCC)** — शिखर सम्मेलन के बयान ने ग़ज़ा में इज़राइली अपराधों को «नरसंहार और नस्लीय सफाए के कार्यक्रम का हिस्सा» कहकर निंदा की (1 दिसंबर 2024)।
- **संयुक्त राष्ट्र की स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय जांच आयोग (COI)** — निष्कर्ष निकाला कि इज़राइल ने ग़ज़ा में नरसंहार किया है (रिपोर्ट 16 सितंबर 2025 को प्रकाशित)।

- **संयुक्त राष्ट्र की इज़राइली प्रथाओं पर विशेष समिति** — निर्धारित किया कि ग़ज़ा में इज़राइल की युद्ध पद्धतियाँ «नरसंहार की विशेषताओं से मेल खाती हैं» (14 नवंबर 2024)।
- **अंतरराष्ट्रीय नरसंहार शोधकर्ता संघ (IAGS)** — सदस्यों का संकल्प (31 अगस्त 2025) जो निष्कर्ष निकालता है कि ग़ज़ा में इज़राइल की कार्रवाइयाँ नरसंहार की कानूनी परिभाषा को पूरा करती हैं; व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया।
- **एमनेस्टी इंटरनेशनल** — 2025 में कई बयान दावा करते हैं कि इज़राइल ग़ज़ा में नरसंहार कर रहा है, जिसमें भुखमरी को विनाश का तरीका बतौर उपराध शामिल है।
- **ह्यूमन राइट्स वॉच (HRW)** — 179 पृष्ठों की रिपोर्ट (19 दिसंबर 2024) जो «नरसंहार के कृत्यों» और विनाश (मानवता के खिलाफ अपराध) को जानबूझकर वंचित करने की नीतियों से जोड़ती है।
- **ECCHR (यूरोपीय संवैधानिक और मानव अधिकार केंद्र)** — औपचारिक कानूनी स्थिति (10 दिसंबर 2024) जो निष्कर्ष निकालती है कि इज़राइल ग़ज़ा में नरसंहार कर रहा है।
- **ब'tselem (इज़राइली मानव अधिकार NGO)** — 2025 रिपोर्ट हमारा नरसंहार जो निष्कर्ष निकालती है कि इज़राइल ग़ज़ा में नरसंहार कर रहा है।
- **फिजिशियंस फॉर ह्यूमन राइट्स - इज़राइल (PHRI)** — 2025 रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला कि इज़राइल नरसंहार कर रहा है (एमनेस्टी सारांश के अनुसार)।
- **FIDH (अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार महासंघ)** — इज़राइल की कार्रवाइयों को बार-बार नरसंहार बताता है और राज्यों से संधि के अनुसार कार्य करने का आह्वान करता है।
- **DAWN (अरब दुनिया के लिए लोकतंत्र अब)** — संगठन के बयान बार-बार ग़ज़ा में जारी नरसंहार का उल्लेख करते हैं।
- **अल-हक** — रजिस्टर और वकालत रखता है जो इज़राइल के व्यवहार को स्पष्ट रूप से नरसंहार के रूप में फ्रेम करता है; अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के आदेशों का हवाला देता है।
- **यूरो-मेड ह्यूमन राइट्स मॉनिटर** — कई प्रकाशन जो इज़राइली अभियान को स्पष्ट रूप से नरसंहार कहते हैं (HRW दस्तावेजीकरण में उद्धृत)।
- **मेडिको इंटरनेशनल** — वकालत और विश्लेषण जो ग़ज़ा में नरसंहार फ्रेमिंग को उठाते हैं (2025 की विशेषताएँ और साक्षात्कार)।

इस आम सहमति की अभूतपूर्व व्यापकता - जो दक्षिण और उत्तर वैश्विक अभिनेताओं को समेटती है और राज्य, संस्थागत और शैक्षणिक रेखाओं को पार करती है - जिम्मेदारी और रोकथाम की अंतरराष्ट्रीय समझ में परिवर्तन का संकेत देती है। युद्धोत्तर युग में पहली बार, नरसंहार संधि को कई संप्रभु राज्यों द्वारा एक सक्रिय और जारी नरसंहार के खिलाफ आह्वान किया गया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में महत्वपूर्ण प्रक्रियात्मक प्रगति हुई है।

## 2. नरसंहार को रोकने में संयुक्त राष्ट्र का कर्तव्य

राज्यों, अंतर-सरकारी अंगों और संयुक्त राष्ट्र तंत्रों के संचयी निष्कर्ष कि ग़ज़ा में इज़राइल की जारी मुहिम नरसंहार का गठन करती है, न केवल नैतिक चिंता पैदा करते हैं, बल्कि नरसंहार को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सामूहिक जिम्मेदारी को सक्रिय करने वाला एक वैध और तत्काल कानूनी जोखिम उत्पन्न करते हैं। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 1, 2(2) और 24 के अनुसार, सुरक्षा परिषद का कानूनी कर्तव्य है कि वह अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने और अंतरराष्ट्रीय कानून के मूल सिद्धांतों का सम्मान सुनिश्चित करने के लिए त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करे।

**नरसंहार संधि** नरसंहार को रोकने और दंडित करने का एक **erga omnes** दायित्व थोपती है, जो एक अनिवार्य मानक (**jus cogens**) को दर्शाती है।

### नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948)

- **अनुच्छेद I:** «संविदाकारी पक्ष पुष्टि करते हैं कि नरसंहार... अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत एक अपराध है जिसे वे रोकने और दंडित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।»

**बोस्निया और हर्जेगोविना बनाम सर्बिया और मोंटेनेग्रो** (2007) मामले में, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने फैसला दिया कि नरसंहार को रोकने का कर्तव्य «उस क्षण से उत्पन्न होता है जब राज्य को गंभीर जोखिम की जानकारी हो जाती है या सामान्य

रूप से हो जानी चाहिए।»

### अंतरराष्ट्रीय न्यायालय, बोस्निया बनाम सर्बिया (फैसला, 26 फरवरी 2007)

- «एक राज्य का नरसंहार को रोकने का दायित्व और संबंधित कार्रवाई का कर्तव्य उस क्षण से उत्पन्न होता है जब राज्य को गंभीर जोखिम की जानकारी हो जाती है या सामान्य रूप से हो जानी चाहिए कि नरसंहार किया जा रहा है।»

इसलिए, जब नरसंहार के विश्वसनीय प्रमाण मौजूद हों - जैसा कि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अंतरिम उपायों, संयुक्त राष्ट्र के जांच तंत्रों और कई राज्यों तथा मानव अधिकार संगठनों के निष्कर्षों द्वारा स्थापित है - परिषद और विशेष रूप से उसके स्थायी सदस्य कानूनी रूप से इसे रोकने के लिए कार्रवाई करने के लिए बाध्य हैं। चार्टर के अनुच्छेद 24(1) के तहत अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी और सभी सदस्य राज्यों की ओर से सामूहिक कार्रवाई करने की इसकी अनूठी क्षमता को देखते हुए, यह कर्तव्य परिषद पर **विशेष बल** के साथ लागू होता है। जब विश्वसनीय अंग - जिसमें स्वयं अदालत शामिल है - नरसंहार के संभाव्य जोखिम का निर्धारण करते हैं, तो परिषद कानूनी रूप से इसे रोकने के लिए कार्रवाई करने के लिए बाध्य है।

## 3. वीटो का दुरुपयोग और संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका

तथ्यात्मक रिपोर्ट की भारी मात्रा और नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948) तथा संयुक्त राष्ट्र चार्टर से उत्पन्न अनिवार्य कानूनी दायित्वों के बावजूद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने बार-बार सुरक्षा परिषद की उन कार्रवाइयों को बाधित किया है जिनका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय न्यायालय द्वारा ग़ज़ा में «संभाव्य नरसंहार» कहे गए को समाप्त करना है। अक्टूबर 2023 से, वाशिंगटन ने कम से कम सात बार अपना वीटो अधिकार प्रयोग किया है ताकि युद्धविराम लागू करने, मानवीय पहुंच सुविधाजनक बनाने या अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के अनुपालन की मांग करने वाले संकल्प प्रस्तावों को रोक सके। इनमें से प्रत्येक संकल्प महासचिव, मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (OCHA) और संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (UNRWA) के तत्काल आह्वानों को दर्शाता था, साथ ही स्वतंत्र जांच तंत्रों के निष्कर्षों को, लेकिन फिर भी एक स्थायी सदस्य की एकत्रफा आपत्ति से निरस्त कर दिया गया।

पहला वीटो, अक्टूबर 2023 में प्रयोग किया गया, ने इज़राइल द्वारा ग़ज़ा की प्रारंभिक बमबारी और बड़े पैमाने पर नागरिक हतोहतों की शुरुआत के बाद तत्काल मानवीय युद्धविराम की मांग करने वाले संकल्प को रोक दिया। बाद के वीटो - **दिसंबर 2023, फरवरी 2024, अप्रैल 2024, जुलाई 2024, दिसंबर 2024 और मार्च 2025** में - एक सुसंगत और जानबूझकर पैटर्न का पालन करते हैं। हर बार जब परिषद अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की अपनी चार्टर जिम्मेदारी के अनुसार कार्य करने का प्रयास करती थी, संयुक्त राज्य अमेरिका ने वीटो का प्रयोग करके इज़राइल को जवाबदेही से बचाया और नागरिक जीवन की रक्षा के लिए डिज़ाइन की गई सामूहिक कार्रवाइयों को रोक दिया।

## 4. चार्टर की व्याख्या - वियना संधि कानून का ढांचा

चार्टर एक सुसंगत और एकीकृत कानूनी ढांचा बनाता है जिसमें सभी प्रावधानों का समान मानक स्थिति है और उन्हें सामंजस्यपूर्ण रूप से पढ़ा जाना चाहिए। इसके अनुच्छेदों के बीच कोई अंतरिक पदानुक्रम नहीं है; बल्कि प्रत्येक को संदर्भित, व्यवस्थित और टेलीओलॉजिकल रूप से समझा जाना चाहिए - अर्थात् चार्टर के सामान्य उद्देश्यों और सिद्धांतों की रोशनी में, जैसा कि अनुच्छेद 1 और 2 में व्यक्त किया गया है। यह व्यवस्थित व्याख्या, जिसे अंतरराष्ट्रीय न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र के अपने कानूनी अंगों द्वारा बार-बार पुष्टि की गई है, यह सुनिश्चित करती है कि चार्टर अंतरराष्ट्रीय शासन के एक अद्वितीय और अविभाज्य उपकरण के रूप में कार्य करे, न कि अलग-अलग शक्तियों या विशेषाधिकारों के संग्रह के रूप में।

वियना संधि कानून संधि (1969) में व्यक्त व्याख्यात्मक ढांचा संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर समान और पूर्ण रूप से लागू होता है। यद्यपि चार्टर संधि से पहले का है, इसमें कोडित व्याख्या सिद्धांत चार्टर के मसौदे के समय अंतरराष्ट्रीय रिवाजी कानून के रूप में स्थापित थे और तब से अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की न्यायशास्त्र में पुष्टि हुए हैं। इसलिए, चार्टर को सद्व्यावना में, उसके उद्देश्य और लक्ष्य की रोशनी में और एक सुसंगत और एकीकृत समग्र के रूप में व्याख्या किया जाना चाहिए।

### वियना संधि कानून संधि (1969)

- **अनुच्छेद 26 (Pacta sunt servanda):** «प्रत्येक प्रभावी संधि पक्षों को बाध्य करती है और उन्हें सद्व्यवहार में निष्पादित किया जाना चाहिए।»
- **अनुच्छेद 31(1):** «संधि को सद्व्यवहार में उसके शब्दों के सामान्य अर्थ के अनुसार उनके संदर्भ में और उसके उद्देश्य और लक्ष्य की रोशनी में व्याख्या किया जाना चाहिए।»
- **अनुच्छेद 31(3)(c):** «पक्षों के बीच संबंधों में लागू अंतरराष्ट्रीय कानून की कोई प्रासंगिक नियम को ध्यान में रखा जाएगा।»

इसलिए, सुरक्षा परिषद को सौंपी गई शक्तियाँ, जिसमें वीटो अधिकार शामिल है, को चार्टर के उद्देश्य और लक्ष्य के विपरीत व्याख्या या लागू नहीं किया जा सकता।

## ५. वीटो के कानूनी प्रतिबंध

यद्यपि संयुक्त राष्ट्र चार्टर का अनुच्छेद 27(3) सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों को वीटो अधिकार प्रदान करता है, यह शक्ति पूर्ण नहीं है। इसे चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों (अनुच्छेद 1 और 24) और सद्व्यवहारा (अनुच्छेद 2(2)) के साथ सख्त अनुपालन में प्रयोग किया जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी वाले अंग के रूप में, सुरक्षा परिषद अपने कार्यों को इन दायित्वों के अनुसार निष्पादित करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य है।

अनुच्छेद 24(1) के अनुसार, सुरक्षा परिषद अपनी अधिकारिता संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों की ओर से प्रयोग करती है। यह प्रतिनिधि जनादेश सभी सदस्यों – और विशेष रूप से वीटो वाले स्थायी सदस्यों – पर एक न्यासी कर्तव्य थोपता है कि वे सद्व्यवहारा में और चार्टर के मूल उद्देश्यों के अनुसार कार्य करें। अनुच्छेद 1, 2(2) और 24(2) के साथ पढ़ा गया, अनुच्छेद 24(1) इस सिद्धांत का समर्थन करता है कि वीटो अधिकार को परिषद की अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की सामूहिक जिम्मेदारी को विफल करने के लिए कानूनी रूप से उपयोग नहीं किया जा सकता।

चार्टर अनुच्छेद 27(3) के माध्यम से वीटो पर स्पष्ट प्रक्रियात्मक प्रतिबंध भी निर्धारित करता है, जो प्रदान करता है कि विवाद की एक पक्षकार मतदान से विरत रहेगी। यह प्रावधान परिषद की निर्णय लेने में निष्पक्षता के मूल सिद्धांत को मूर्त रूप देता है। जब एक स्थायी सदस्य सशस्त्र संघर्ष की एक पक्ष को महत्वपूर्ण सैन्य, वित्तीय या लॉजिस्टिक समर्थन प्रदान करता है, तो उस सदस्य को तर्कसंगत रूप से विवाद की पक्षकार माना जा सकता है और इसलिए विरत रहने के कानूनी दायित्व के अधीन है।

### संयुक्त राष्ट्र चार्टर

- **अनुच्छेद 1(1)** «अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना और इस उद्देश्य के लिए: शांति के खिलाफ खतरों को रोकने और दूर करने तथा आक्रमण के कृत्यों या शांति के अन्य उल्लंघनों को दबाने के लिए प्रभावी सामूहिक उपाय करना, और अंतरराष्ट्रीय विवादों या स्थितियों को जो शांति भंग करने की संभावना रखते हैं, शांतिपूर्ण साधनों से और न्याय और अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों के अनुसार समायोजित या निपटाना।»
- **अनुच्छेद 2(2)** «सभी सदस्य... इस चार्टर के अनुसार स्वीकार किए गए दायित्वों को सद्व्यवहारा में निष्पादित करेंगे।»
- **अनुच्छेद 24(1)** «संयुक्त राष्ट्र की त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए, उसके सदस्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी सुरक्षा परिषद को सौंपते हैं और सहमत हैं कि परिषद इस जिम्मेदारी के निर्वहन में उनकी ओर से कार्य करती है।»
- **अनुच्छेद 24(2)** «इन कर्तव्यों के निर्वहन में, सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और सिद्धांतों के अनुसार कार्य करती है। इन कर्तव्यों के निर्वहन के लिए परिषद को सौंपी गई विशिष्ट शक्तियाँ अध्याय VI, VII, VIII और XII में निर्धारित हैं।»
- **अनुच्छेद 27(3)** «अध्याय VI के तहत और अनुच्छेद 52 के पैराग्राफ 3 के तहत निर्णयों में, विवाद की एक पक्षकार मतदान से विरत रहेगी।»

सामूहिक रूप से, चार्टर के अनुच्छेद 1, 2(2), 24(1)-(2) और 27(3), वियना संधि कानून संधि के अनुच्छेद 31-33 के अनुसार व्याख्या किए गए, यह स्थापित करते हैं कि वीटो एक असीमित विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि एक सशर्त शक्ति है जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए न्यास में रखी गई है। इस शक्ति का दुर्भावनापूर्ण, चार्टर के विपरीत उद्देश्यों के लिए, या परिषद को उसके प्राथमिक कार्यों के निर्वहन से रोकने वाले तरीके से प्रयोग अधिकार का दुरुपयोग और **ultra vires**

कृत्य का गठन करता है। ऐसा वीटो चार्टर के ढांचे में **कोई कानूनी प्रभाव** नहीं रखता और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले अनिवार्य मानकों (**jus cogens**) के साथ असंगत है, विशेष रूप से नरसंहार की रोकथाम और नागरिकों की सुरक्षा से संबंधित।

## ६. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की भूमिका

सुरक्षा परिषद की अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी, जैसा कि चार्टर के अनुच्छेद 1 और 24 में व्यक्त किया गया है, आवश्यक रूप से अंतरराष्ट्रीय कानून को बनाए रखने और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की स्थिरता को खतरे में डालने वाली अत्याचारों को रोकने का कर्तव्य शामिल करता है। परिषद का जनादेश राजनीतिक विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि एक कानूनी न्यासी संबंध है जो सभी सदस्यों की ओर से निष्पादित किया जाता है और चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों द्वारा सीमित है। जब एक स्थायी सदस्य अंतरराष्ट्रीय कानून के गंभीर उल्लंघनों – जिसमें नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराध या जेनेवा संधियों के गंभीर उल्लंघन शामिल हैं – की रोकथाम या प्रतिक्रिया के उपायों को रोकने के लिए वीटो का उपयोग करता है, तो ऐसी कार्रवाई वीटो शक्ति का दुरुपयोग और चार्टर का **ultra vires** कृत्य का गठन करती है।

ऐसी परिस्थितियों में, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की व्याख्यात्मक भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। अपने स्टैच्यू के अनुच्छेद 36 के अनुसार, अदालत **विवादित क्षेत्राधिकार** का प्रयोग कर सकती है जब सदस्य राज्य चार्टर या नरसंहार संधि की व्याख्या या अनुप्रयोग से संबंधित विवाद प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, अदालत के स्टैच्यू के अनुच्छेद 65 और चार्टर के अनुच्छेद 96 के अनुसार, **महासभा** या सुरक्षा परिषद तथा संयुक्त राष्ट्र के अन्य अधिकृत अंग विशेष संदर्भों में वीटो के उपयोग के कानूनी परिणामों को स्पष्ट करने के लिए सलाहकार राय मांग सकते हैं। यद्यपि सलाहकार राय औपचारिक रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, वे चार्टर की **प्रामाणिक व्याख्याएँ** का गठन करती हैं और संयुक्त राष्ट्र की प्रथा में निर्णयिक भार रखती हैं।

### संयुक्त राष्ट्र चार्टर

- **अनुच्छेद 96(1)** «महासभा या सुरक्षा परिषद किसी कानूनी प्रश्न पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय से सलाहकार राय मांग सकती है।»

यद्यपि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (अदालत) के पास सुरक्षा परिषद की किसी निर्णय या वीटो को अमान्य घोषित करने की स्पष्ट अधिकारिता नहीं है, वह संयुक्त राष्ट्र चार्टर की व्याख्या करने और उसके तहत की गई कार्रवाइयों के **कानूनी परिणामों** को निर्धारित करने की क्षमता बनाए रखती है। संयुक्त राष्ट्र का मुख्य न्यायिक अंग के रूप में (चार्टर का अनुच्छेद 92), अदालत **विवादित** और सलाहकार दोनों कार्य करती है जो चार्टर की व्याख्या और संयुक्त राष्ट्र अंगों की कार्रवाइयों की वैधता के प्रश्नों को कवर करती हैं। इसलिए, यदि एक स्थायी सदस्य को **दुर्भावना** में या चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों के सापेक्ष **ultra vires** वीटो प्रयोग करने का निर्धारण किया जाता है, तो अदालत सिद्धांत रूप में पुष्टि कर सकती है कि ऐसा वीटो कानूनी रूप से प्रभावहीन था और संबंधित संकल्प प्रस्ताव मौलिक रूप से अपनाया गया माना जाता है।

व्यावहारिक शब्दों में, ऐसी निर्धारण परिषद के अन्य सदस्यों को चार्टर के विपरीत प्रयोग किए गए वीटो को **कानूनी प्रभाव** के बिना मानने की अनुमति देती है, जिससे परिषद को संबंधित संकल्प को **मौलिक रूप** से अपनाने के लिए आगे बढ़ने की अनुमति मिलती है। वीटो को **null ab initio** के रूप में माना जाता है – परिषद के शांति और सुरक्षा बनाए रखने के सामूहिक कर्तव्य को नकारने में असमर्थ।

## ७. संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता को पुनर्स्थापित करना – कानून के माध्यम से एक मार्ग

ग़ज़ा में नरसंहार से उजागर संकट ने दिखाया है कि संयुक्त राष्ट्र की लकवा उसके संस्थापक पाठ की मुख्य रूप से विफलता नहीं है, बल्कि उसकी व्याख्या और अनुप्रयोग की है। सुरक्षा परिषद की कार्रवाई करने में असमर्थता – अंतरराष्ट्रीय न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र के अपने जांच तंत्रों द्वारा संभाव्य नरसंहार की मान्यता के बावजूद – कानूनी अधिकारिता की कमी से नहीं, बल्कि चार्टर के उद्देश्यों के विरुद्ध कार्य करने वाले एक स्थायी सदस्य द्वारा वीटो के दुरुपयोग से उत्पन्न होती है।

चार्टर सुधार के आह्वान, यद्यपि नैतिक रूप से अनिवार्य, लंबे समय से **अनुच्छेद 108** को बदलने की प्रक्रियात्मक असंभवता में फंसे हैं, एक ऐसी प्रणाली में जो अपने विशेषाधिकार को बनाए रखने में सबसे अधिक निवेशित लोगों की सहमति की मांग करती है। इसलिए, समाधान चार्टर को फिर से लिखने के अप्राप्य प्रोजेक्ट में नहीं, बल्कि **संधि कानून और चार्टर की अपनी आंतरिक तर्क** के अनुसार उसकी व्याख्या में निहित है।

पहला और सबसे तत्काल कदम **अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (अदालत)** से सलाहकार राय प्राप्त करना है वीटो शक्ति की वैधता और सीमाओं पर चार्टर के **अनुच्छेद 27(3)** के अनुसार। ऐसी राय चार्टर को बदलती नहीं है, बल्कि उसे **वियना संधि कानून संधि (VCLT)** और **अंतरराष्ट्रीय कानून के अनिवार्य मानकों** के अनुसार व्याख्या करती है, पुष्टि करती है कि वीटो - चार्टर के तहत किसी भी शक्ति की तरह - सद्व्यवहार, उद्देश्य और **jus cogens** के दायित्वों द्वारा सशर्त है।

## अदालत की ओर दोहरे मार्ग: महासभा और सुरक्षा परिषद

संयुक्त राष्ट्र चार्टर के **अनुच्छेद 96(1)** और **अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के स्टैच्यू के अनुच्छेद 65** के अनुसार, **महासभा** और **सुरक्षा परिषद** दोनों के पास **किसी कानूनी प्रश्न** पर सलाहकार राय मांगने की क्षमता है। प्रत्येक मार्ग संगठन को वीटो की कानूनी सीमाओं को स्पष्ट करने का एक विशिष्ट - लेकिन पूरक - साधन प्रदान करता है।

**महासभा का मार्ग** एक स्पष्ट और गारंटीकृत मार्ग प्रदान करता है, क्योंकि ऐसी संकल्प केवल साधारण बहुमत की आवश्यकता रखती है और वीटो के अधीन नहीं है। यह वीटो की सीमा और सीमाओं की न्यायिक स्पष्टता प्राप्त करने का सबसे सुलभ और प्रक्रियात्मक रूप से सुरक्षित साधन बनाता है, विशेष रूप से जब सुरक्षा परिषद स्वयं लकवाग्रस्त है।

**सुरक्षा परिषद** हालांकि ऐसी राय मांगने की अधिकारिता बनाए रखती है। यहां प्रश्न उठता है कि क्या एक स्थायी सदस्य का वीटो परिषद को अपनी शक्तियों की सीमाओं पर कानूनी सलाह मांगने से रोक सकता है। चार्टर के **अनुच्छेद 27(2)** के अनुसार, परिषद की प्रक्रियात्मक मामलों पर निर्णय नौ सदस्यों के सकारात्मक मत से लिए जाते हैं और वीटो के अधीन नहीं हैं। सलाहकार राय मांगने वाला संकल्प - जो न तो मौलिक अधिकार निर्धारित करता है और न ही बाध्यकारी दायित्व थोपता है - स्पष्ट रूप से इस प्रक्रियात्मक श्रेणी में आता है।

## संयुक्त राष्ट्र चार्टर

- **अनुच्छेद 27(2)** «सुरक्षा परिषद के प्रक्रियात्मक मामलों पर निर्णय नौ सदस्यों के सकारात्मक मत से लिए जाते हैं।»

**नामीबिया पूर्ववर्ती (S/RES/284 (1970))** इस व्याख्या का समर्थन करता है: दक्षिण अफ्रीका की नामीबिया में उपस्थिति के कानूनी परिणामों पर परिषद की सलाहकार राय की मांग को प्रक्रियात्मक निर्णय के रूप में माना गया और वीटो के बिना अपनाया गया। इसी तरह, **वीटो शक्ति की सीमाओं** पर सलाहकार राय मांगने वाला संकल्प भी परिषद के अपने संस्थागत प्रक्रिया से संबंधित है और राज्य के अधिकारों या दायित्वों को प्रभावित करने वाला मौलिक कृत्य नहीं है।

इसलिए, **सुरक्षा परिषद** कानूनी रूप से वीटो की सीमाओं पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की सलाहकार राय मांगने वाला संकल्प प्रक्रियात्मक मतदान के रूप में अपनाने में सक्षम है, जिसमें केवल नौ सकारात्मक मतों की आवश्यकता है और वीटो के अधीन नहीं है। एक बार भेजे जाने पर, **अंतरराष्ट्रीय न्यायालय** पर निर्भर है कि वह अनुरोध स्वीकार करे या नहीं। ऐसा करने में, अदालत निहित रूप से पुष्टि करती है कि प्रश्न प्रक्रियात्मक है और उसके समक्ष उचित रूप से रखा गया है - और इसलिए यह तय करती है कि वीटो की सीमाओं का प्रश्न अदालत की न्यायिक क्षमता में आता है या नहीं, अधिकार के बजाय नीति के माध्यम से।

यह मार्ग सुनिश्चित करता है कि **कोई स्थायी सदस्य** एकतरफा रूप से संयुक्त राष्ट्र को अपने संस्थापक उपकरण की कानूनी व्याख्या प्राप्त करने से नहीं रोक सकता। यह वियना संधि के अनुसार **effet utile** सिद्धांत का भी सम्मान करता है - कि किसी संधि की व्याख्या इस तरह की जानी चाहिए कि उसके उद्देश्य और लक्ष्य को पूर्ण प्रभाव दिया जाए। वीटो को अपनी वैधता की कानूनी स्पष्टता को रोकने की अनुमति देना एक तार्किक और कानूनी विरोधाभास होगा जो चार्टर की सुसंगतता और अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यवस्था की अखंडता को कमज़ोर करेगा।

## कानून की सर्वोच्चता को पुनर्स्थापित करना

इसलिए, महासभा और सुरक्षा परिषद दोनों के पास अदालत से सलाहकार राय प्राप्त करने के कानूनी और पूरक मार्ग हैं। महासभा का मार्ग प्रक्रियात्मक रूप से गारंटीकृत है; सुरक्षा परिषद का मार्ग चार्टर और संधि कानून के तहत कानूनी रूप से बचाव योग्य है। प्रत्येक एक ही मूल उद्देश्य प्राप्त करता है: स्पष्ट करना कि वीटो को नरसंहार की रोकथाम को रोकने या संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों को विफल करने के लिए कानूनी रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

इस प्रक्रिया के माध्यम से, संगठन अपनी विश्वसनीयता को पुनर्स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाता है - पुष्टि करता है कि उसकी अधिकारिता शक्ति से नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कानून की सर्वोच्चता से उत्पन्न होती है। कानून की शासन, न कि राजनीतिक विशेषाधिकार, संयुक्त राष्ट्र के सबसे शक्तिशाली अंगों को भी निर्देशित करना चाहिए। केवल इस सिद्धांत की पुष्टि करके ही संगठन अपना संस्थापक उद्देश्य पुनः प्राप्त कर सकता है: आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की विपत्ति से बचाना।

## निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता आज गहरे हिसाब-किताब के क्षण में है। ग़ज़ा में सामने आ रहे नरसंहार ने अंतरराष्ट्रीय कानूनी व्यवस्था के भीतर फ्रैक्चर लाइनों को उजागर किया है - उसके मानकों की अपर्याप्तता में नहीं, बल्कि उन्हें बनाए रखने में उसके संस्थानों की विफलता में। नरसंहार का निषेध, नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948) में निहित और **jus cogens** के रूप में मान्यता प्राप्त, सभी राज्यों और संयुक्त राष्ट्र के सभी अंगों को बिना अपवाद के बाध्य करता है। फिर भी, भारी प्रमाणों और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के औपचारिक निर्धारणों के सामने, संगठन का शांति और सुरक्षा बनाए रखने का मुख्य अंग वीटो के दुरुपयोग से लकवाग्रस्त रहा है।

यह लकवा अंतरराष्ट्रीय राजनीति की अपरिहार्य विशेषता नहीं है; यह एक शासन विफलता और कानूनी विश्वास की रुकावट है। सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य चार्टर के अनुच्छेद 24(1) के अनुसार सभी सदस्यों की ओर से अपनी शक्तियाँ रखते हैं। यह अधिकारिता न्यासी है, न कि स्वामित्व वाली। जब वीटो जारी ◆◆◆रसंहार की रक्षा करने या मानवीय सुरक्षा को रोकने के लिए उपयोग किया जाता है, तो यह शांति बनाए रखने का उपकरण नहीं रह जाता, बल्कि दंडमुक्ति का उपकरण बन जाता है। ऐसा उपयोग **ultra vires** है - चार्टर द्वारा सौंपी गई शक्तियों से परे - और संयुक्त राष्ट्र की पत्र और भावना दोनों के साथ कानूनी रूप से असंगत है।

अंततः, संयुक्त राष्ट्र की अपनी वैधता को पुनर्स्थापित करने की क्षमता उसकी अपने कानून को लागू करने की इच्छा पर निर्भर करती है। विश्वसनीयता को पुनर्स्थापित करना केवल संकल्प या रिपोर्ट जारी करना नहीं है; यह संगठन को उन सिद्धांतों के साथ संरेखित करना है जिन्होंने उसकी सृष्टि को उचित ठहराया - शांति, न्याय, समानता और मानव जीवन की सुरक्षा। ग़ज़ा में नरसंहार इस युग की विरासत को परिभाषित करेगा, न केवल सीधे शामिल राज्यों के लिए, बल्कि पूरे अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के लिए।

संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता और अंतरराष्ट्रीय कानून की अखंडता इस विकल्प पर निर्भर करती है।

## संयुक्त राष्ट्र महासभा - संकल्प का मसौदा

यह संकल्प मसौदा सद्वावना और आवश्यकता से प्रस्तुत किया जाता है, जो विश्व की महान कानूनी परंपराओं में सदियों से व्यक्त सिद्धांतों पर आधारित है कि अधिकारिता को सच्चाई, न्याय और जीवन के प्रति श्रद्धा के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए।

यह किसी सदस्य राज्य या सदस्य राज्यों के समूह के लिए **सुविधा** और **संसाधन** के रूप में प्रस्तावित है जो महासभा के माध्यम से कानूनी और रचनात्मक मार्ग का अनुसरण करना चाहते हैं ताकि वीटो शक्ति की सीमाओं को स्पष्ट किया जाए चार्टर के अनुच्छेद 27(3) के अनुसार वियना संधि कानून संधि और नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948) के व्याख्यात्मक ढांचे के साथ।

मसौदा अनिवार्य नहीं है और कोई स्वामित्व दावा नहीं करता। यह किसी राज्य या प्रतिनिधिमंडल द्वारा संशोधित, अनुकूलित या विस्तारित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जैसा कि अंतरराष्ट्रीय शांति की आवश्यकताएँ और संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य उपयुक्त समझें।

यह इस विश्वास के साथ प्रस्तुत किया जाता है कि जहां राजनीतिक सुधार अप्राप्य रहता है, **कानूनी व्याख्या संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता** को पुनर्स्थापित करने और अंतरराष्ट्रीय कानून की शक्ति पर सर्वोच्चता की पुष्टि करने का सबसे सुरक्षित साधन बनी रहती है।

## **चार्टर के अनुच्छेद 27(3) के अनुसार वीटो शक्ति के कानूनी प्रतिबंधों पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की सलाहकार राय की मांग**

महासभा,

स्मरण करती हुई संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और सिद्धांतों को, जैसा कि चार्टर में निर्धारित है,

पुष्टि करती हुई कि चार्टर के अनुच्छेद 24(1) के अनुसार, सदस्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी सुरक्षा परिषद को सौंपते हैं और सहमत हैं कि परिषद उनकी ओर से कार्य करती है,

मान्यता देते हुए कि सभी सदस्य चार्टर के अनुसार स्वीकार किए गए दायित्वों को सद्व्यावना में निष्पादित करेंगे, अनुच्छेद 2(2) के अनुसार,

स्मरण करते हुए कि चार्टर के अनुच्छेद 27(3) के अनुसार विवाद की एक पक्षकार अध्याय VI के तहत और अनुच्छेद 52 के पैराग्राफ 3 के तहत निर्णयों में मतदान से विरत रहेगी,

स्मरण करते हुए चार्टर के अनुच्छेद 96(1) और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के स्टैच्यू के अनुच्छेद 65, जो महासभा को किसी कानूनी प्रश्न पर सलाहकार राय मांगने की क्षमता प्रदान करते हैं,

पुष्टि करते हुए कि नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948) (नरसंहार संधि) नरसंहार को रोकने और दंडित करने का एक *erga omnes* और *jus cogens* दायित्व कोडित करती है,

ध्यान देते हुए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की न्यायशास्त्र को, जिसमें नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि का अनुप्रयोग (बोस्निया और हर्जेगोविना बनाम सर्बिया और मॉटेनेग्रो) (26 फरवरी 2007 का फैसला), जिसने फैसला दिया कि नरसंहार को रोकने का कर्तव्य उस क्षण से उत्पन्न होता है जब एक राज्य गंभीर जोखिम की जानकारी प्राप्त करता है या सामान्य रूप से प्राप्त कर लेना चाहिए,

मान्यता देते हुए कि वियना संधि कानून संधि (1969) संधियों की व्याख्या और निष्पादन पर अंतरराष्ट्रीय रिवाजी कानून को दर्शाती है, जिसमें सद्व्यावना, उद्देश्य और लक्ष्य और *effet utile* के सिद्धांत शामिल हैं (अनुच्छेद 26 और 31-33),

जागरूक कि वीटो का प्रयोग चार्टर के उद्देश्य और लक्ष्य, सामान्य अंतरराष्ट्रीय कानून और अनिवार्य मानकों के साथ सुसंगत होना चाहिए और अधिकार का दुरुपयोग कानूनी प्रभाव नहीं पैदा कर सकता,

चिंतित कि नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराधों या अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून के गंभीर उल्लंघनों को रोकने या समाप्त करने के उपायों को रोकने के लिए वीटो का उपयोग परिषद को अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में असमर्थ बनाने और संगठन की विश्वसनीयता को कमजोर करने का जोखिम रखता है,

**दृढ़ संकल्प** ऐसी परिस्थितियों में अनुच्छेद 27(3) के अनुसार वीटो के उपयोग की सीमाओं और कानूनी परिणामों को कानूनी रूप से स्पष्ट करने के लिए,

१. निर्णय लेती है, संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 96(1) और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के स्टैच्यू के अनुच्छेद 65 के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय से इस संकल्प की परिशिष्ट A में उल्लिखित कानूनी प्रश्नों पर सलाहकार राय मांगने का;

२. महासचिव से अनुरोध करती है कि इस संकल्प को परिशिष्ट A-C के साथ तुरंत अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को प्रेषित करें और अदालत की उपलब्धता में परिशिष्ट C में संकेतात्मक रूप से सूचीबद्ध तथ्यात्मक और कानूनी डोज़ियर रखें;

३. सदस्य राज्यों, सुरक्षा परिषद, आर्थिक और सामाजिक परिषद, मानव अधिकार परिषद, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (अपने जनादेश के ढांचे में) और संयुक्त राष्ट्र के प्रासंगिक अंगों, एजेंसियों और तंत्रों को परिशिष्ट A में उल्लिखित प्रश्नों पर अदालत को लिखित बयान प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करती है, और महासभा के अध्यक्ष को महासभा की ओर से संस्थागत बयान प्रस्तुत करने की अनुमति देती है;

४. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय से अनुरोध करती है, जहां तक संभव हो, इस मामले को प्राथमिकता देने और लिखित बयानों और मौखिक प्रक्रियाओं के लिए समयसीमाएँ निर्धारित करने के लिए जो अनिवार्य मानकों और नरसंहार को रोकने के कर्तव्य से संबंधित प्रश्नों की निहित तात्कालिकता के लिए उपयुक्त हों;

५. सुरक्षा परिषद से आह्वान करती है कि वह सलाहकार राय तक अपनी वीटो प्रथा की परीक्षा करे, चार्टर के अनुच्छेद 1, 2(2), 24 और 27(3), नरसंहार संधि और वियना संधि कानून संधि की रोशनी में;

६. निर्णय लेती है कि अपनी अगली सत्र की अस्थायी कार्यसूची में «चार्टर के अनुच्छेद 27(3) के अनुसार वीटो शक्ति की सीमाओं पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय की सलाहकार राय का अनुसरण» शीर्षक वाला बिंदु शामिल करे और मुद्रे की आगे की जांच जारी रखें।

## परिशिष्ट A — अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को प्रश्न

### प्रश्न १ — संधि व्याख्या और सद्व्यावना

- क्या वियना संधि कानून संधि के अनुच्छेद 31-33 में कोडित संधि व्याख्या के रिवाजी नियम संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर लागू होते हैं, और यदि हाँ, तो सद्व्यावना, उद्देश्य और **effet utile** चार्टर के अनुच्छेद 1, 2(2) और 24 के संबंध में अनुच्छेद 27(3) की व्याख्या को कैसे सूचित करते हैं?
- विशेष रूप से, क्या वीटो चार्टर के अनुसार प्रयोग किया जा सकता है यदि उसका प्रभाव परिषद की अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी को विफल करना और अनिवार्य मानकों द्वारा आवश्यक उपायों को रोकना हो?

### प्रश्न २ — विवाद की पक्षकार और विरत रहना

चार्टर के अनुच्छेद 27(3) में वाक्यांश «विवाद की एक पक्षकार मतदान से विरत रहेगी» का कानूनी अर्थ क्या है, जिसमें शामिल हैं:

- यह निर्धारित करने के मानदंड कि क्या परिषद का कोई सदस्य अध्याय VI के तहत «विवाद की पक्षकार» है; और
- क्या और कैसे युद्धरत पक्ष को महत्वपूर्ण सैन्य, वित्तीय या लॉजिस्टिक समर्थन एक स्थायी सदस्य को विरत रहने के लिए बाध्य «विवाद की पक्षकार» बनाता है?

### प्रश्न ३ — Jus Cogens और नरसंहार को रोकने का कर्तव्य

- क्या **jus cogens** मानक और **erga omnes** दायित्व, जिसमें नरसंहार संधि के अनुच्छेद I और रिवाजी अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार नरसंहार को रोकने का कर्तव्य शामिल है, वीटो के कानूनी प्रयोग को सीमित करते हैं?
- किस क्षण में – विशेष रूप से अदालत की गंभीर जोखिम पर न्यायशास्त्र की रोशनी में – सुरक्षा परिषद और उसके सदस्यों के लिए **कार्रवाई का कर्तव्य** उत्पन्न होता है, जिससे वीटो का प्रयोग चार्टर के साथ असंगत हो जाता है?

### प्रश्न ४ — ultra vires वीटो के कानूनी परिणाम

- संयुक्त राष्ट्र के संस्थागत ढांचे के भीतर कानूनी परिणाम क्या हैं यदि वीटो दुर्भावना में, **jus cogens** के विपरीत या अनुच्छेद 27(3) का उल्लंघन करके प्रयोग किया जाता है?
- ऐसी परिस्थितियों में, क्या सुरक्षा परिषद या संयुक्त राष्ट्र वीटो को कानूनी रूप से प्रभावहीन मान सकते हैं, उपायों को मौलिक रूप से अपनाने या उसके प्रभावों को अन्यथा अनदेखा करने, जहां अनुच्छेद 1 और 24 के अनुसार परिषद की जिम्मेदारियों को निष्पादित करने के लिए आवश्यक हो?

3. चार्टर के अनुच्छेद 25 और 2(2) के तहत सदस्य राज्यों के **दायित्व** क्या हैं एक कथित **ultra vires** वीटो के सामने?

#### प्रश्न ५ — महासभा के साथ संबंध (शांति के लिए एकजुट)

यदि प्रश्न 3 और 4 में वर्णित परिस्थितियों में वीटो प्रयोग किया जाता है, तो चार्टर के अनुच्छेद 10-14 और संकल्प A/RES/377(V) (शांति के लिए एकजुट) के तहत महासभा की शक्तियों के लिए **कानूनी निहितार्थ** क्या हैं?

#### प्रश्न ६ — संधि कानून

- वियना संधि कानून संधि के **अनुच्छेद 26 (pacta sunt servanda)** और **27** (आंतरिक कानून बहाना नहीं) एक स्थायी सदस्य की वीटो पर निर्भरता को कैसे योगदान देते हैं, जहां ऐसी निर्भरता चार्टर या नरसंहार संधि के दायित्वों के **निष्पादन को रोकती हो?**
- क्या **अधिकार का दुरुपयोग** की सिद्धांत या सिद्धांत कि **ultra vires** कृत्य कानूनी प्रभाव नहीं पैदा करते संयुक्त राष्ट्र के कानूनी व्यवस्था में वीटो पर लागू होते हैं, और किस परिणामों के साथ?

#### परिशिष्ट B — मुख्य कानूनी पाठ

##### संयुक्त राष्ट्र चार्टर

- अनुच्छेद 1(1):** «अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना... और इस उद्देश्य के लिए शांति के खिलाफ खतरों को रोकने और दूर करने के लिए प्रभावी सामूहिक उपाय करना।»
- अनुच्छेद 2(2):** «सभी सदस्य... इस चार्टर के अनुसार स्वीकार किए गए दायित्वों को सद्व्यवहार में निष्पादित करेंगे।»
- अनुच्छेद 24(1):** «संयुक्त राष्ट्र की त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए, उसके सदस्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्राथमिक जिम्मेदारी सुरक्षा परिषद को सौंपते हैं और सहमत हैं कि परिषद... उनकी ओर से कार्य करती है।»
- अनुच्छेद 27(3):** «अध्याय VI के तहत और अनुच्छेद 52 के पैराग्राफ 3 के तहत निर्णयों में, विवाद की एक पक्षकार मतदान से विरत रहेगी।»
- अनुच्छेद 96(1):** «महासभा या सुरक्षा परिषद किसी कानूनी प्रश्न पर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय से सलाहकार राय मांग सकती है।»

##### वियना संधि कानून संधि (1969)

- अनुच्छेद 26 (Pacta sunt servanda):** «प्रत्येक प्रभावी संधि पक्षों को बाध्य करती है और उन्हें सद्व्यवहार में निष्पादित किया जाना चाहिए।»
- अनुच्छेद 27:** «एक पक्ष अपनी आंतरिक कानून की प्रावधानों का हवाला देकर संधि के निष्पादन न करने का बहाना नहीं कर सकता।»
- अनुच्छेद 31(1):** «संधि को सद्व्यवहार में उसके शब्दों के सामान्य अर्थ के अनुसार उनके संदर्भ में और उसके उद्देश्य और लक्ष्य की रोशनी में व्याख्या किया जाना चाहिए।»
- अनुच्छेद 31(3)(c):** «पक्षों के बीच संबंधों में लागू अंतरराष्ट्रीय कानून की कोई प्रासंगिक नियम को ध्यान में रखा जाएगा।»
- अनुच्छेद 32-33:** (सहायक साधन; प्रामाणिक पाठों की व्याख्या)

##### नरसंहार की रोकथाम और दंड की संधि (1948)

- अनुच्छेद I:** «संविदाकारी पक्ष पुष्टि करते हैं कि नरसंहार... अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत एक अपराध है जिसे वे रोकने और दंडित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।»

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय — बोस्निया और हर्जेंगोविना बनाम सर्बिया और मोर्टेनेग्रो (फैसला, 26 फरवरी 2007)

- «एक राज्य का नरसंहार को रोकने का दायित्व और संबंधित कार्रवाई का कर्तव्य उस क्षण से उत्पन्न होता है जब राज्य को गंभीर जोखिम की जानकारी हो जाती है या सामान्य रूप से हो जानी चाहिए कि नरसंहार किया जा रहा है।»

## परिशिष्ट C — महासचिव के लिए संकेतात्मक डोज़ियर

अदालत के समर्थन में, महासचिव से अनुरोध किया जाता है कि एक डोज़ियर संकलित और प्रेषित करें जिसमें शामिल हों:

- संयुक्त राष्ट्र चार्टर की प्रथा:** अनुच्छेद 24 और 27 से संबंधित अभ्यास के रेपर्टरी प्रविष्टियाँ; अनुच्छेद 27(3) पर ऐतिहासिक travaux; «विवाद की पक्षकार» विरत रहने से संबंधित पूर्ववर्ती।
- सुरक्षा परिषद के रिकॉर्ड:** सामूहिक अत्याचार स्थितियों में संकल्प मसौदे और मतदान मिनट; अनुच्छेद 27(3) या विरत रहने के दायित्वों का उल्लेख करने वाले सत्रों के शाब्दिक मिनट।
- महासभा के दस्तावेज़:** शांति के लिए एकजुट के तहत संकल्प; प्रासंगिक सलाहकार राय अनुरोध और बाद की प्रथा।
- अदालत की न्यायशास्त्र:** बोस्निया बनाम सर्बिया (2007); प्रासंगिक अंतरिम उपाय और चार्टर की व्याख्या, *jus cogens, erga omnes* और संस्थागत शक्तियों पर सलाहकार राय।
- संधि कानून:** वियना संधि के तैयार कार्य और अनुच्छेद 26-33 पर ILC टिप्पणी; संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के मेमोरेंडा चार्टर को संधि के रूप में।
- अत्याचार रोकथाम कोर्पस:** महासचिव की रिपोर्ट; HRC और COI के निष्कर्ष; OHCHR और OCHA की स्थिति अपडेट; नरसंहार और सामूहिक अत्याचारों को रोकने के लिए देखभाल के कर्तव्यों पर प्रथा।
- शैक्षणिक और संस्थागत विश्लेषण:** अंतरराष्ट्रीय कानून के मान्यता प्राप्त विशेषज्ञों के दस्तावेज़ **आधिकार का दुरुपयोग, ultra vires** कृत्य और अनिवार्य मानकों के उल्लंघन में कृत्यों के **कानूनी प्रभाव** पर अंतरराष्ट्रीय संगठनों में।

## स्पष्टीकरण नोट (गैर-परिचालन)

- उद्देश्य:** जब अनिवार्य मानक और *erga omnes* दायित्व शामिल हों तो वीटो के उपयोग की **कानूनी सीमाएँ** स्पष्ट करना; **ultra vires** वीटो के **कानूनी परिणामों** की पहचान करना; और परिषद और महासभा (शामिल शांति के लिए एकजुट) के बीच अंतर्क्रिया की रूपरेखा तैयार करना।
- डिज़ाइन:** परिशिष्ट A के प्रश्न अदालत को आमंत्रित करते हैं:
  - चार्टर पर **VCLT** के अनुच्छेद 31-33 लागू करने (सद्बावना व्याख्या; उद्देश्य और लक्ष्य);
  - अनुच्छेद 27(3) के तहत «विवाद की पक्षकार» और विरत रहने को परिभाषित करने;
  - स्पष्ट करने कि **jus cogens** (शामिल नरसंहार को रोकने का कर्तव्य) वीटो को कैसे सशर्त करता है;
  - दुर्भावना में या अनिवार्य मानकों के विपरीत प्रयोग किए गए वीटो के **कानूनी प्रभाव** को निर्दिष्ट करने; और
  - जब परिषद लकवाग्रस्त हो तो **महासभा की भूमिका** को स्पष्ट करने।